प्रस्तावना

धर्मगुरु दलाई लामा

हेलेना नार्बर्ग-होज़ लद्दाख तथा वहाँ के लोगों की बहुत समय से मित्र रही है। इस पुस्तक में वे पारंपरिक लद्दाखी जीवन शैली की मुक्त कंठ से सराहना करती हैं और उसके भविष्य को लेकर कुछ चिंतित भी लगती है।

तिब्बत व शेष हिमालय क्षेत्र की भाँति लद्दाख का आत्मतुष्ट अस्तित्व शताब्दियों तक लगभग अक्षुण्ण रहा है। कठिन जलवायु और कठोर पर्यावरण के बावजूद, लोग कुल मिलाकर सुखी एवं संतुष्ट हैं। नि:संदेह यह अंशत: मितव्ययिता के कारण है, जो कि आत्म-निर्भरता से आती है और अंशत: प्रमुख बौद्ध संस्कृति के कारण है। लेखिका ने लद्दाखी समाज के मानवीय मूल्यों को रेखांकित किया है, जो उचित ही है; एक दूसरे की मौलिक आवश्यकताओं के प्रति गहन सम्मान तथा पर्यावरण की प्राकृतिक सीमाओं की स्वीकृति। इस प्रकार की उत्तरदायी प्रवृत्ति ऐसी है, जिसकी हम सराहना कर सकते हैं और उससे कुछ सीख सकते हैं।

हाल के दशकों में लद्दाख में जो एकतरफ़ा परिवर्तन हुए हैं, वे वैश्विक वृत्ति के प्रतिबिंब हैं। जैसे-जैसे हमारा संसार छोटा होता जाता है, पहले के अलग-थलग पड़े लोग स्वयमेव वृहत्तर मानवीय परिवार में लाए जाते हैं। प्राकृतिक रूप से समन्वय स्थापित करने में समय तो लगता ही है, जिसके दौरान परिवर्तन होना लाज़मी है।

हमारी धरती के पर्यावरण के लिये जो संकट पैदा हो रहा है, उसके प्रति लेखिका की चिंता से मैं सहमत हूँ और उसने आधुनिक विकास की अनेक समस्याओं के लिये वैकल्पिक समाधानों की दिशा में जो कार्य किये हैं, उनकी प्रशंसा करता हूँ। यदि लद्दाखियों के प्राकृतिक संसाधनों, उनके एक-दूसरे के प्रति और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को बचाकर रखा जा

सकता है तथा उसे नई स्थितियों पर लागू किया जा सकता है, तो मैं सोचता हूँ कि हम लद्दाख के भविष्य के प्रति आशावादी हो सकते हैं। यहाँ पर युवा लद्दाखी भी हैं, जिन्होंने आधुनिक शिक्षा पूरी की है और अपने लोगों की सहायता करने की इच्छा रखते हैं। इसके साथ ही पारंपरिक शिक्षा को मठवादी व्यवस्था में पुष्ट किया गया है और इसके लिये तिब्बत के मठों से, जो कि निर्वासित अवस्था में ही फिर से स्थापित किये गये है, से संबंध जोड़ा गया है। और अंत में लद्दाख के प्रति विदेशों में सहानुभूति रखने वाले मित्रों की कमी नहीं है, जो इस लेखिका की तरह हर संभव सहायता एवं प्रोत्साहन देने को तत्पर हैं।

पारंपरिक ग्रामीण समाज चाहे कितना ही आकर्षक क्यों न दिखाई दे, उसके लोगों को आधुनिक विकास के फायदों का आनंद लेने के अवसर से वंचित नहीं किया जा सकता। किंतु, जैसा कि यह पुस्तक सुझाव देती है, विकास व सीख केवल एक ही दिशा की और उन्मुख नहीं होना चाहिये। पारंपरिक समाज के लोगों में, जैसे कि लद्दाख में, प्राय: एक आंतरिक विकास होता है, एक संतुष्टि व दिली अनुभूति, जिसका हम सब को अनुसरण करना चाहिये।